प्रस्तुतकत्री- डॉ.जागृति

(अतिथि प्राध्यापिका)

हिन्दी विभाग, रामदयालु सिंह, महाविद्यालय

मुजफ्फरपुर

पार्ट- 2 ,(M.I.L)

फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी द्वारा रचित कहानी 'संवदिया' की समीक्षा करें।

'संवदिया' कहानी फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी कालजई रचना है। संवदिया एक अंचल विशेष की कृति है। इस कहानी के घर के बड़ी बहू की क्या भूमिका होती है उसको बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, किस प्रकार परिवार के अन्य छोटे-बड़े सदस्य अपनी छुट्टियां बिताने गांव आते हैं और वहाँ से लूट खसोट कर ले जाते है। संवदिया 'रेणु' जी की कालजई कहानी है जिसमें 'रेणु'जी ने संवाद पहुंचने वाले कि मनोदशा का लाजवाब चित्रण किया है।

यह कहानी आरम्भ से अंत तक मानव-हदय के भावात्मक उदगारों से उच्छवासित है संवदिया कहानी में भावनाओ का इतने सुन्दर रूप से चित्रित हुआ दिखता है। कहानी की विषय वस्तु का आधार है बड़ी बहुरिया के अभावग्रस्त जीवन की यातना प्रसतुत किया है बड़ी बहुरिया को देवरों द्वारा किए गए अत्याचार के द्वारा उत्पन्न त्रासदी को दर्शाया गया है बड़ी बहुरिया का जीवन बहुत ही अभाव ग्रस्त और असहाय जीवन क्योंकि उनके आगे-पीछे कोई न था उनका जीवन अर्थहीन हो गया था वह अपने ससुराल जलालगढ़ गाँव में नहीं रहना चाहती हैं उसे हर वस्तु की कमी हो गई थी यहाँ तक खाने-पीने की दिक्कत हो गई थी उसके देवर शहर से आकर लूट खसोट कर यहाँ से लेकर चले जाते और बड़ी बहुरिया को कुछ नहीं रहने देता उसे खाने तक का मुसीबत हो गया बड़ी बहुरिया अपनी मां के पास संवाद भेजना चाहती है कि उसे बुला ले। बड़ी बहुरिया का यह संवाद ही संवदिया कथा के मूल, विस्तार और अंत का आधारभूत तत्व है। बहुरिया जिस समय यह संवाद हरगोबिन को ले जाने को कहती है उसी समय उसकी जीवन दशा के बारे में पूरा परिचय

मिल जाता है। सभी पाठको का मन बड़ी बहुरिया के लिए करुणा से भर उठता है बड़ी बहुरिया की आज कि दशा देख कर विशेष जानकारी हमें मिलती है हरगोबिन के आत्म-संलाप से बड़ी बहुरिया के अतीत के बारे में अनेक बातें जानने को मिलती है।

प्रस्तुत कहानी में बड़ी बहुरिया के संवाद संप्रेषण से भरी हुई है। संवाद ले जाने वाले संवदिया हरगोबिन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह बड़ी बहुरिया की माँ को उसका अत्यंत दुखद संवाद कैसे सुनाए! जो संवाद हरगोबिन बड़ी बहुरिया की माँ को सुनाने वाला है वह संवाद बड़ी बहुरिया की उसके परिवार की और पूरे जलालगढ़ की प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई है। यह सिर्फ बोल देने मात्र से इस सभी की छवि को धूमिल करेगा हरगोबिन की यह सोच उसके वैचारिक बड़प्पन का परियाचक है उसकी भावात्मक गहनता को घोतक है। बड़ी बहुरिया को वह गाँव की लक्ष्मी समझता है वह सोचता है। अगर गाँव की लक्ष्मी गाँव छोड़ कर चली जाएगी तो वह पूरे गाँव का अपमान होगा- पूरा गांव कलंकित होगा। बड़ी बहुरिया का वह दुख जनता है फिर भी वह संवाद उसकी माँ को कहने से हिचकता है बड़ी बहुरिया का संवाद लेकर उसके मायके के लिए प्रस्थान करने के समय से लेकर जलालगढ़ लौट जाने तक वह बड़ी बहुरिया के बारे में ही सोचता रहता है। की वह बड़ी बहुरिया को क्या कहेगा कैसे कहेगा उसके मन में यह विचार चलता रहता है।

इस कहानी का वातावरण करुणा से भरा हुआ है चाहे बड़ी बहुरिया अपना संवाद हरगोबिन को कहती है या फिर हरगोबिन शुरू से अंत तक अपनी यात्रा में बड़ी बहुरिया के संवाद को याद रखना। कहानी के पात्रों द्वारा करुण वातावरण का सृजन होता रहता है।यह कहानी भावों से भरी हुई है इस कहानी में सवर्त्र करुण कोमल भावनाएं तरंगित होती दिखाई देती है इस कहानी का शीर्षक 'संवदिया' हरगोबिन- संवदिया की भूमिका को ध्यान में रखकर चुना गया संवदिया कहानी का मूलआधार तो बड़ी हवेली से लेकर बड़ी बहुरिया के दुःख से उतपन्न परन्तु हरगोबिन के मनोभाव के धरातल पर। एक तरह से बड़ी बहुरिया के जीवन में होने वाले दुखों को उदगाता हरगोबिन संवदिया ही है 'संवदिया' कहानी का संवाद आंचलिक है। यह आंचलिक परिवेश से जुड़ा हुआ कहानी है। ग्रामीण धरती पर कृषि-संस्कृति में जीने वाले प्राणियों की कहानी है। कथाकार 'रेणु'जी कहानी के शीर्षक कथानक

के लिए इस आंचलिक शब्द का चयन किया है। यह कहानी पूरी तरह से ग्रामीण परिवेश से जुड़ा हुआ है।